

जयपुर जिले में जल स्वावलम्बन अभियान का एक विशेष अध्ययन

*विक्रम सिंह

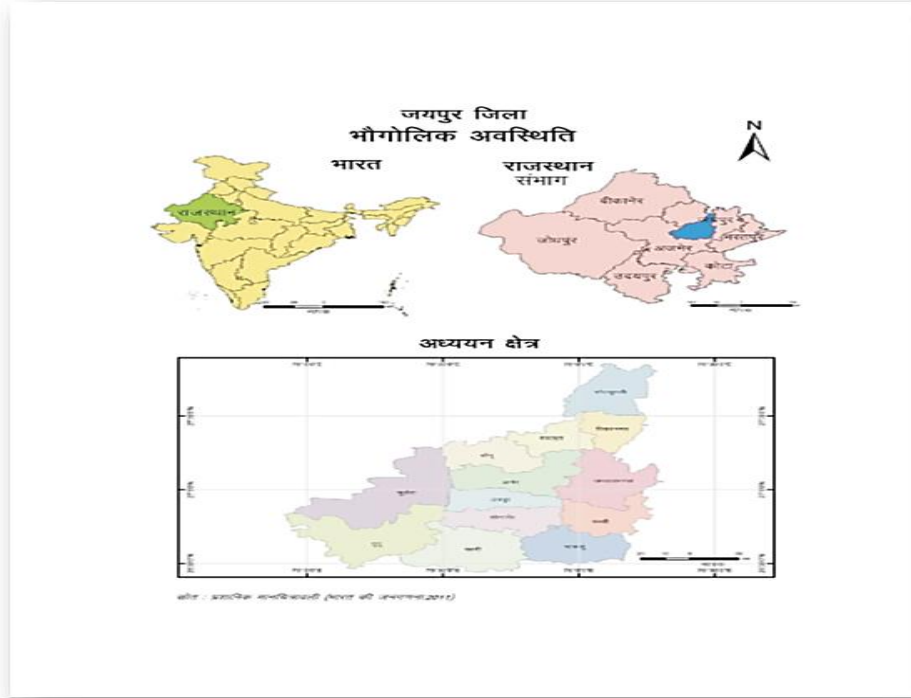
जल आपूर्ति की उपलब्धता, किसी भी क्षेत्र विशेष की प्रमुख आवश्यकताओं में एक है जिस हेतु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जल संरक्षण अत्यावश्यक हो जाता है। जल स्वावलम्बन अभियान के तहत जल से जुड़े हुए विभिन्न कार्यों को जमीनी स्तर पर उतारा गया है। जिसमें जल को मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता में शामिल किया गया। जल के समुचित प्रबन्धन के लिए वर्ष भर दैनिक उपयोग में आने वाले जल में कमी की जाए। लगातार अपव्यय के कारण जल की उपलब्धता में कमी आई है। मानव जाति का यह नैतिक कर्तव्य है कि समझदारी के साथ मिलकर व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयास किये जाएँ। जल प्रबन्धन व पर्यावरण संरक्षण के बारे में विचार है कि—“पर्यावरण संरक्षित है तो जल है और जल है तो कल है।” हमारे वैज्ञानिक, पौराणिक, धार्मिक ग्रंथों में जल को प्राण तत्व माना गया है। जल स्वावलम्बन अभियान के तहत लोगों के जीवन स्तर में गुणात्मक एवं मात्रात्मक सुधार आया है।

अध्ययन क्षेत्र

किसी स्थान विशेष की अवस्थिति से वहाँ की जलवायु, मृदा, वनस्पति, कृषि, जीव-जन्तु, मानव आदि प्रभावित होते हैं। भौगोलिक अवस्थिति के अनुसार ही उस स्थान पर विभिन्न वनस्पतियाँ एवं जीव, पर्यावरण के साथ सम्बन्ध स्थापित कर अपना विकास करते हैं। जयपुर राजस्थान राज्य की राजधानी है। जयपुर जिला राजस्थान में सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक एवं ऐतिहासिक रूप में अपना प्रमुख स्थान रखता है। यह राजस्थान का सबसे अधिक जनसंख्या वाला जिला है। जयपुर जिला, प्रदेश के पूर्वी भाग में 26°23' से 27°51' उत्तरी अक्षांशों एवं 74°55' से 76°50' पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है। इसके उत्तर में सीकर व हरियाणा का महेन्द्रगढ़ जिला, दक्षिण में टोंक, पूर्व में अलवर, दौसा तथा पश्चिम में नागौर व अजमेर जिले स्थित हैं। जयपुर जिले की समुद्रीक स्तर से 431 मीटर / 1417 फीट ऊंचाई पर स्थित है। इस जिले में अरावली पर्वत श्रेणी उत्तर-पश्चिम क्षेत्र से गुजरती है। यहां जलवायु शुष्क एवं स्वास्थ्यवर्धक है। अरावली पर्वत श्रेणी मानसून रेखा के समान्तर होने के कारण यहां वर्षा कम होती है। जयपुर में वर्षा का औसत 60.35 सेन्टीमीटर है। शीतकाल में यहाँ (मावठ) वर्षा होती है। जनवरी का तापमान 8°C से 10°C तक होता है। यह जिला वर्ष 2011 में 955.66 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र घेरे हुए था। जयपुर जिले में कोई महत्वपूर्ण बड़ी नदी प्रवाहित नहीं होती है। इस जिले की मौसमी नदियों में बाणगंगा, मांसी, बाण्डी, साबी, मेण्ढा, ढूँढ व सोता प्रमुख नदियाँ हैं।

जयपुर जिले में जल स्वावलम्बन अभियान का एक विशेष अध्ययन

विक्रम सिंह



मानचित्र : जयपुर जिले की अवस्थिति

उद्देश्य

1. जयपुर जिले में जल स्वावलम्बन अभियान के विभिन्न उद्देश्यों का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र में जल स्वावलम्बन अभियान के विभिन्न चरणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. अध्ययन क्षेत्र में जल स्वावलम्बन अभियान के तहत हुए कार्यों से जल संचयन की विधियों का प्रयोग बढ़ा है।

शोध विधि

उक्त अध्ययन में उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए विषय पर उपलब्ध साहित्य से सम्बन्धित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रतिवेदनों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र की सूचनाएँ सरकारी कार्यालयों से एकत्रित करके विश्लेषित की गयी हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सामग्री तथा आंकड़ों का एकत्रीकरण निम्नलिखित स्रोतों से किया गया है –

जयपुर जिले में जल स्वावलम्बन अभियान का एक विशेष अध्ययन

विक्रम सिंह

1. **प्राथमिक स्रोत** : इस सम्बन्ध में अनुसूची, प्रश्नावली, कार्यकरण तथा परिचर्चा के बारे में व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से उपयोग किया गया है।
2. **द्वितीय स्रोत**: इस सम्बन्ध में प्रकाशित व अप्रकाशित सामग्री, पत्र-पत्रिकाओं, लेखों, कार्यालयों की सूचनाओं का उपयोग किया गया है।

जल स्वावलम्बन अभियान

जल स्वावलम्बन एक राष्ट्रीय कार्यक्रम है जिसका हिस्सा सम्पूर्ण राजस्थान है। राजस्थान की राजधानी जयपुर जिला भी सम्पूर्ण भौगोलिक इकाई के रूप में इस अभियान का अहम् हिस्सा है। जयपुर जिले में 13 तहसीलें भी इस अभियान का हिस्सा हैं। जयपुर का धरातल भौगोलिक रूप से अनेक विषमताएँ ग्रहण किए हुए है। कहीं समतल मैदान तो, कहीं ऊबड़-खाबड़ तो, कहीं पथरीला धरातल तथा कहीं विस्तृत उपजाऊ मैदान स्थित है। जयपुर जिले में विषमताएँ भी विकास का अहम् हिस्सा हैं जिसमें विभिन्न क्रियाएँ तथा गतिविधियाँ सम्पन्न होती हैं इसलिए जयपुर सम्पूर्ण भारतवर्ष में अपना अलग स्थान रखता हैं। विशेषज्ञों और भूगोलवेत्ताओं का मानना है कि अनवरत बढ़ती जनसंख्या, प्रदूषित शहरों का गांवों में मिलना, औद्योगिकीकरण का विस्तार, बढ़ता नगरीकरण, लगातार कम हो रहे वन क्षेत्र तथा अंधाधुन्ध दोहन ने सर्वाधिक जल स्रोतों को प्रभावित किया है।

जल स्वावलम्बन अभियान के उद्देश्य

जल स्वावलम्बन अभियान का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं—

- विभिन्न जलीय स्रोतों का पुनरुद्धार करना।
- जलीय संरक्षण की नवीन विधियों का विकास करना।
- सिंचाई तथा कृषि भूमि का वैज्ञानिक उपयोग करना।
- विद्युत उत्पादन को प्रोत्साहित करना।
- प्रतिवर्ष बाढ़ से ग्रसित क्षेत्र को चिन्हित करना।
- घरेलू एवं औद्योगिक उपयोग की प्राप्ति करना।
- कृत्रिम जलाशयों में मछली पालन करना।
- जलीय स्रोतों को पर्यटन स्थलों में बदलने की कवायद शुरू करना।
- वृक्षारोपण, ईंधन का प्रबन्ध एवं वन संरक्षण को बढ़ावा देना।
- पशुचारे की व्यवस्था करना एवं चारागाहों को बढ़ावा देना।
- भूमि अपरदन को नियंत्रित करना।
- क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम को प्राथमिकता देना।

जयपुर जिले में जल स्वावलम्बन अभियान का एक विशेष अध्ययन

विक्रम सिंह

जल स्वावलम्बन अभियान के प्रमुख चरण

जल स्वावलम्बन अभियान के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम संचालित एवं सृजित किए जा रहे हैं जिसमें अभियान के निम्न चरण निर्धारित किए गये हैं।

1. प्रथम चरण

इस चरण का आरम्भ 27 जनवरी 2016 को हुआ, जिसके अन्तर्गत राजस्थान राज्य की 295 पंचायत समितियों के लगभग 3,529 (तीन हजार पांच सौ उनतीस) गांवों का चयन किया गया। जिसमें लगभग छोट-मोटे 94 हजार निर्माण कार्य पूरे किए गए हैं। प्रथम चरण राजस्थान सरकार ने अपने सार्थक प्रयासों के माध्यम से सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया है। इस चरण के सार्थक परिणाम मिलने के पश्चात् राज्य सरकार ने दूसरा चरण आरम्भ किया। जल स्वावलम्बन अभियान के अन्तर्गत जयपुर जिले में सर्वाधिक व्यय किया गया है। जल का प्रबन्धन एवं संरक्षण प्रथम चरण में प्राथमिकता के साथ सम्मिलित किया गया था।

2. द्वितीय चरण

इस चरण का आरम्भ 9 दिसम्बर 2016 को हुआ, जिसमें 4200 (चार हजार दो सौ) नए गांवों का चयन किया गया एवं 66 शहरों का चयन किया गया अर्थात् प्रत्येक जिले से 2 शहरों का लक्ष्य निर्धारित किया गया। इस चरण में एक वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम के अलावा अनेक पर परकोलेशन टैंक भी बनाए गए हैं। सम्बन्धित क्षेत्र के जल स्रोतों का पुनः निर्माण कार्य किया गया है।

3. तृतीय चरण

इस चरण की शुरुआत 9 दिसम्बर 2017 से हुई, इसमें सम्बन्धित क्षेत्र के 4240 गांवों को सम्मिलित कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाया गया है। शुरुआती दोनों चरणों से भी बड़ा ये चरण सफलातपूर्वक पूर्ण कर लिया गया है जिसकी सराहना ब्रिक्स देशों के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने भी की है। खण्डित अवस्था में जीर्ण-शीर्ण कुएँ और बावड़ियों को मरम्मत करके उन्हें संरक्षित किया गया है जिसके कारण स्थानीय स्तर पर लोगों की जलापूर्ति हो सके। जो जलीय स्रोत अपनी अंतिम स्टेज पर हैं, उनको ठीक करके उनकी साफ-सफाई की गई है फलस्वरूप वे पुनः अपनी क्षमता को पा सके हैं।

4. चतुर्थ चरण

जल स्वावलम्बन अभियान का यह चतुर्थ तथा अंतिम चरण है, जिसका कार्य प्रगति पर है, इसका प्रारम्भ 3 अक्टूबर 2018 को हुआ। चतुर्थ चरण से ही इस योजना का नाम राजीव गाँधी जल संचय योजना (RGJSY) कर दिया गया है। इसके अन्तर्गत 101 गांवों का चयनित कर सर्वेक्षण का कार्य पूर्ण कर लिया है। जल से संकटग्रस्त गांवों के लिए यह एक क्रांतिकारी कदम है। राजस्थान सरकार के इस विश्वव्यापी कार्यक्रम की दुनिया के कई राष्ट्रों ने सराहना की है तथा कई राष्ट्रों ने अपने स्तर पर लागू भी कर दिया है। जिसमें पारस्परिक जल संरक्षण के तरीकों जैसे तालाब, बावड़ियाँ और टांके इत्यादि का मरम्मत कार्य एवं नई तकनीक से एनीकट, टांके, मेड़बन्दी आदि का निर्माण किया गया है।

जयपुर जिले में जल स्वावलम्बन अभियान का एक विशेष अध्ययन

विक्रम सिंह

तालिका : जिले में जल स्वावलंबन योजनान्तर्गत कार्यों की संख्या

क्र. सं.	पंचायत समिति	प्रथम चरण (पूर्ण)	द्वितीय चरण (पूर्ण)	तृतीय चरण (पूर्ण)	चतुर्थ चरण (स्वीकृत कार्य)
1	कोटपूतली	70	183	357	141
2	विराटनगर	347	314	270	428
3	शाहपुरा	323	345	471	251
4	सांभर	250	410	306	357
5	दूदू	83	186	294	112
6	फागी	619	181	356	315
7	सांगानेर	290	64	235	151
8	आमेर	186	234	289	114
9	जमवारामगढ़	308	286	238	93
10	बस्सी	129	232	348	441
11	चाकसू	105	103	216	262
12	गोविन्दगढ़	799	235	312	277
13	जालसू	73	218	260	398
14	झोटवाडा	101	193	232	588
15	पावटा	80	250	255	137
	योग	3763	3434	4439	4065

स्रोत: जल स्वावलंबन योजना चरणवार प्रगति प्रतिवेदन

जयपुर जिले में जल स्वावलंबन अभियान का एक विशेष अध्ययन

विक्रम सिंह

जल संचयन की सामान्य विधियाँ इस प्रकार हैं—

- विरड़ा पद्धति, काटा पद्धति, कुई या बेरी पद्धति, जाबो पद्धति, कुआँ पद्धति, पुनर्भरण पिट द्वारा छत से प्राप्त वर्षा जल का संचयन, उपलब्ध नलकूप द्वारा छत से प्राप्त वर्षा जल का संचयन, पुनर्भरण कुओं के द्वारा छत से प्राप्त वर्षा जल का संचयन, गली प्लग द्वारा वर्षा जल का संचयन, कन्दूर बांध के द्वारा वर्षा जल का संचयन, गैबियन संरचना द्वारा वर्षा जल का संचयन, चैक डैम द्वारा वर्षा जल का संचयन आदि विधियों द्वारा जल का संचयन किया जा रहा है।
- घरों के आसपास या वर्तमान में कुएँ जल आपूर्ति के प्रमुख स्रोत हैं। भूमिगत जलाशयों या पुनः वर्षा जल का संचयन आवश्यक रूप से किया जा रहा है।
- वर्तमान में नवनिर्मित मकानों की छतों पर वर्षा जल के संचय की व्यवस्था हर हाल में का जाने लगी है।
- घरों, उद्योगों और खेतों में पानी के उपयोग का समुचित प्रबन्धन किया जा रहा है।
- अनेक स्नानघर, मन्दिर तथा रेस्टोरेण्टों में जल के उपयोग की एक समुचित पॉलिसी तैयार की जा रही है, जिसके दीर्घगामी परिणाम प्राप्त होंगे।
- बहते हुए जल का उपयोग हमेशा स्थानीय स्तर पर समुचित व्यवस्था के साथ किया जाने लगा है, जिसमें पानी की आपूर्ति एक ही समय सुनिश्चित की जाती है।
- वृक्षारोपण, अत्याधुनिक सिंचाई पद्धति का उपयोग, छोटे-छोटे बांधों एवं जलाशयों का उचित निर्माण, सामाजिक जागरूकता तथा जल शोध संयंत्रों के माध्यम से भी जल का उचित संचयन किया जाने लगा है।

जयपुर जिले में भू-जल संसाधन विकास सरकार के साथ-साथ किसानों एवं उद्योगों में भी व्यक्तिगत रूप से संचयन किया जा रहा है। घरातलीय जल स्रोतों का प्रबन्धन वर्तमान में पहली आवश्यकता हो गया है, जिसके रख-रखाव एवं प्रबन्धन में स्थानीय लोगों की भूमिका अधिक सार्थक हो सकती है। सतत दोहन एवं विभिन्न मौसमी परिघटनाएँ प्रत्यक्ष रूप से धरातलीय भू-जल स्तर में परिवर्तन करती हैं। भू-जल स्तर को बढ़ाने के लिए उपर्युक्त जल संचयन की तकनीकों का प्रचार-प्रसार कर जन मानस को जागरूक करने की आवश्यकता है।

बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ-साथ जल पर निर्भरता भी दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है। भविष्य में पेयजल की आवश्यकता और बढ़ेगी। अतः गिरते हुए जलस्तर को देखते हुए नलकूप और हैण्डपम्प पर प्रतिबंध लगाना आवश्यक है। राज्य सरकार की पॉलिसी के तहत एक निश्चित व आवश्यकता वाले स्थानों पर ही लगाना अधिक उचित होगा। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में जैसे-पीने, भोजन बनाने, नहाने-धोने, साफ-सफाई इत्यादि में जल एक महत्वपूर्ण तत्व है। अनेक क्षेत्रों में विद्युत उत्पादन के कार्यों में भी इसका उपयोग होता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में जयपुर जिले में जल स्वावलम्बन अभियान के विभिन्न उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है एवं अभियान के विभिन्न चरणों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में जल स्वावलम्बन अभियान के तहत हुए कार्यों से जल संचयन की विधियों का प्रयोग बढ़ रहा है। पिछले कुछ वर्षों में भू-जल भण्डार की कमी निरन्तर बढ़ती ही जा रही है, जिसके तहत सरकारें पुराने तथा परम्परागत जलीय स्रोतों को संरक्षित करने की ओर अपना

जयपुर जिले में जल स्वावलम्बन अभियान का एक विशेष अध्ययन

विक्रम सिंह

ध्यान लगा रही हैं जिससे कुछ जलीय स्रोतों में पुनःजल का संरक्षण होने लगा है। इस भू-जल स्तर को बढ़ाने के लिए प्राचीन जलाशय का संरक्षण अति आवश्यक है। प्रत्येक नगर पर छोटे-छोटे चैकडेम बनाकर तथा नालियों के माध्यम से यथास्थान जल को रोककर जल के स्तर को ऊपर उठा सकते हैं। जलस्तर में वृद्धि मुख्य रूप से भू-जल संवर्द्धन पद्धति के द्वारा इनको अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है।

***शोधार्थी**
भूगोल विभाग
महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राज.)

सन्दर्भ सूची

1. शर्मा, आर. एन. (2022). वाटर कन्जर्वेशन— स्टैटेजीज एण्ड सोलुशन, रावत प्रकाशन।
2. शर्मा, एच.एस. एवं शर्मा, एम.एल. (2020), राजस्थान का भूगोल, पंचशील प्रकाशन।
3. सिन्हा अनिल कुमार (2020), भारत में जल संसाधन विकास एवं नियोजन, रेप्रो प्रकाशन।
4. शुक्ला राजेश एवं शुक्ला रश्मि (2017), कृषि भूगोल, अर्जुन प्रकाशन।
5. जिला सांख्यिकी रूपरेखा 2020, जयपुर जिला।

जयपुर जिले में जल स्वालम्बन अभियान का एक विशेष अध्ययन

विक्रम सिंह